नशा - युवा पीढ़ी का अभिशाप

हमारा देश विशाल हैं। हर देश मे अपनी एक समस्य होती है। उन में से एक है नशापान। आज कल के मनुष्य अपने मन से आया हुआ काम करते हैं। यह नहीं सोचते कि वह काम अच्छा या फिर बुरा। बिना सोच विचार के काम करते हैं। यह बहुत गलत हैं। हमें हर काम सोच विचार करके काम करना चाहिए। उनमें से एक है युवा पीढी मैं जीनेवाले बच्चें। आजकल के लोगो को नशापान करना एक मज़े की बात है। कुछ लोगों तो कहते हैं की नशापान करके उनके भितर पूर्व शक्ति का उन्हे एैसास देता हैं। कुछ लोगों तो कहते हैं की वह शराब पीकर वह उसका दुःख का खत्म प्रकट करता हैं। यह सब गलत हैं। क्योंकि अगर हम परिश्रम करते हैं तभी हमे पता चल सकता हैं कि हम क्या कर सकते हैं। और क्या हमें नशापान करके ही हमारा दुःख प्रकट करना चाहिए। हमें हमारा दुःख प्रकट करने कि आवश्यकता

बिलकुल नहीं हैं। आना भी कैसा? आजकल सिनेमा देखना सबको बहुत पसंद हैं। कुछ लोगों तो उसे सच्च मानकर बैठते हैं। सिनेमा में अभिनय करनेवाले नशापान का उपयोग करते हैं। वैसे ही देखनेवाले भी उपयोग करने शुरू करते हैं। आजकल नशापान के बिना कोई भी सिनेमा नहीं हैं। अगर एक भी नशापान को सीन नहीं होतो लोगो गुस्सा होते हैं। पहले युवा पीढी के लोगों अगर नशापान का सीन नहीं हो तो रामयण युद्ध शुरू करते हैं। यह सब जानते हैं। अगर सिनेमा जैसे क्षेत्र अच्छे काम करे तो २० % तक हम युवा पीढी को नशापान से दूर कर सकते हैं। लेकिन लालच के कारण ऐसे काम निर्देशक नहीं करते हैं। पैसे से ज्यादा अमूल्य हैं स्वास्थ्य।

हमारे भारत देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने नशापान के विरुद्ध कई काम किया हैं। उन्होंने भारत के हर राज्य के मुख्य मंत्री को यह सूचित किया हैं की अपने अपने राज्यो में नशापान के विरुद्ध आवाज उठाना चाहिए। अपने अपने राज्यो में नशापान के विरुद्ध नारे लगाये, तब हर बच्चे समझे। ऐसा काम केवल सरकार ने बहुत अच्छे से किया हैं। यह सब काम करके मुझे मेरे देश के ऊपर बहुत अभिमान हैं। यह सब काम सबको करना चाहिए। हमें हमेशा यह बोध होना चाहिए की हम भारत के देशवासि हैं। अगर आप देशभगत हो तो आप ऐसा काम नहीं करोगे जैसे नशापान।

हो बुरा लगता हैं। मुझे ऐसा ही एक अनुभव हुआ जब मैं दसवीं कक्षा में पढ रहा था। तब मेरे ही साथ पढनेवाला एक लडका था। वह हैं सूरज। वह एक होशियार बच्चा था। सब टीचर उसे पसंद करते थे। लेकिन उसे कोई दोस्त नही था। वह शहर में नया था। लेकिन मासूम था। उन दिनों परिक्षा का समय था। मेरे कक्षा में कुछ लोग थे जो शराब पान करते हैं। उन्होंने सूरज को एक दिन शराब पान करवाया यह बोलकर की यह जादु दवाई हैं। उसने यह विश्वास करके पिया। उसके बाद वह हर रोज पिने लगा। एक दिन टीचर ने यह देख उसे पकडा तब से वह एक अच्छे बच्चे से बुरा बच्चा बन गया उनके माता-पिता ने बहुत कोशिश किया उसे शराब पान से बाहर लाने का लेकिन नही हुआ। एक दिन उसकी मौत भी हुई। उसकी मौत भयानक था। क्या ऐसा ही मौत चाहते हैं यह युवा पीढी नही तो कुछ लोगो इसे मजाक में लेते हैं। लेकिन उनहें नही पता की उनकी मौत के बाद उनके माता-पिता पर क्या बितेगी? सब लोगो कहते हैं की युवा पीढ़ी तो होशियार हैं। लेकिन कुछ बाते हैं जिस में अब भी विकास आना बाकी हैं। जैसे की नाशपान करना बुरा हैं। ऐसा सोच तो आजकल के युवा पीढी

ही बुरा लगता हैं। मुझे ऐसा ही एक अनुभव हुआ जब मैं दसवी कक्षा मे पढ रहा था। तब मेरे ही साथ पढनेवाला एक लडका था। वह है सूरज। वह एक होशियार बच्चा था। सब टीचर उसे पसंद करते थे। लेकिन उसे कोई दोस्त नही था। वह शहर में नया था। लेकिन मासूम था। उन दिनो परिक्षा का समय था। मेरे कक्षा में कुछ लोगो थे जो नशा पान करते थे। उन्होने सूरज को एक दिन नशा पान करवाया यह बोलकर की यह जादु दवाई है। उसने यह विश्वास करके पिया। उसके बाद वह हर रोज पिने लगा। एक दिन टीचर ने यह देख उसे पकडा। तब से वह एक अच्छे बच्चे से बुरा बच्चा बन गया। उनके माता-पिता ने बहुत कोशिश किया उसे नशा पान से बाहर लाने का लेकिन नही हुआ। एक दिन उसकी मौत भी हुई। उसकी मौत अचानक था। क्या ऐसा ही मौत चाहते हैं यह युवा पीढी नही ना। कुछ लोगो इसे मजाक मे लेते हैं। लेकिन उनहे नही पता की उनकी मौत के बाद उनके माता-पिता पर क्या बितेगी? सब लोगो कहते हैं की युवा पीढी तो होशियार हैं। लेकिन कुछ बाते हैं जिस में अब भी विकास आना बाकी हैं। जैसे की नशापान करना बुरा हैं। ऐसा सोच तो आजकल के युवा पीढी

नहीं है। सुख और दुःख हमारा जीवन के दो मुख्यपात्र हैं। अगर सुख और दुख हैं तभी तो जीवन का एक मजा है। यह दो मुख्यपात्र ही हमें जीने की सिख देती है। दुःख किस को पसंद नहीं है ऐसे सोचकर क्या हर मनुष्य शराब पीता है। नहीं ना। तो हमें इसे कम करने के लिए कोई उपाय सोचना चाहिए। आजकल के पीढ़ी तो उतना सोचती तक नहीं है। हमारा भारत देश आज बहुत उन्नति और तरक्की कर रहा है। लेकिन इसका क्या फायदा? जब उस देश के लोगों को नशापान करके अपने जीवन को खतरे में डाल रहे हैं। सोचकर देखो... हमारा देश विशाल है और तरक्की भी कर रहा है। यह सब सोचकर पड़ोसी देश के कोई भी एक व्यक्ति यह तरक्की देखने आता है। लेकिन आखिर में वह सिर्फ हमारे युवा पीढ़ी की [redacted] बरबादी ही देखता है।

मैं अपने देश का दुश्मन नहीं हूं। मुझसे यह सब नहीं देखा जा सकता। क्योंकि हमारे युवा पीढ़ी कल के भविष्य है। तो अगर हम हमारे जीवन को युवा पीढ़ी में शराब पीकर जीवन बरबाद करेंगे तो हम कल भविष्य कैसे बनेंगे। भविष्य नहीं तो अपने माता-पिता की देखभाल कैसे करेंगे? यह सब सोचकर